नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

तुलसीदास समतामूलक समाज के पक्षधर थे – प्रो. रामजी तिवारी
तुलसीदास की सामाजिक दृष्टि पर व्याख्यान
साहित्य विद्यापीठ में हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र का आयोजन

वर्धा, 03 सितंबर 2018 : गोस्वामी तुलसीदास ने महाकाव्य रामायण के भाव को चौपायी के माध्यम से उदघाटित किया। उन्होंने इसे त्याग और समानता के तत्व के साथ जोड़ा। रामायण को लेकर उनकी दृष्टि समतामूलक समाज को प्रतिष्ठापित करने की रही है। उक्त विचार साहित्यकार प्रो. रामजी तिवारी ने रखे। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में तुलसीदास की सामाजिक दृष्टि विषय पर बोल रहे थे। हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के अंतर्गत साहित्य विद्यापीठ की ओर से गालिब सभागार में व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की

अध्यक्षता साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने की। कार्यक्रम में कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह एवं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अवधेश कुमार मंचासीन थे।

प्रो. तिवारी ने अपने व्याख्यान में रामायाण के विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए उसे लोक के साथ जोड़ा। उनका कहना था कि रामायण में परस्पर आदान-पदान संबंध, राम-सीता के रिश्ते, पर्यावरण और तुलसीदास, नारी दृष्टि और सामाजिक समता की दृष्टि से रामायण को देखना चाहिए। उन्होंने रामायण में निहित अध्यात्म और दर्शन का भी विस्तार से उल्लेख किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. प्रीति सागर ने गांधी जी के राम और तुलसीदास के राम को व्याख्यायित करते हुए दोनों की अलग-अलग दृष्टि को लेकर अपनी बात रखी। इस अवसर

पर कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अवधेश कुमार ने

किया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।